केजरीवाल की धमक खट्टर की फीकी चमक

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

आगामी चुनावों में 'आप' के हरियाणा में उतरने की तैयारियों को लेकर आम आदमी पार्टी ने जो रणनीति अपनाई है उससे राज्य की खट्टर सरकार बेहद परेशान नज़र आ रही है। दिल्ली जैसे आधे-अधूरे राज्य में एक अपाहिज सी सरकार का नेतृत्व करने वाले अरविंद केजरीवाल ने देश में भारी-भरकम मोदी सरकार की जो नींद हराम कर रखी है, उसे देखते हुए समझा जा सकता है कि यदि हरियाणा में भी 'आप' आ गयी तो भाजपा का क्या होगा?

केन्द्रीय सरकार की तमाम अड़ंगेबाजियों के बावजूद 'आप' सरकार ने दिल्ली में जो छुट-पुट सुधार किये है उनसे भी अपनी तुलना कराने से हरियाणा सरकार घबराती है। आम जनता से जुड़े अनेकों मुद्दों में से शिक्षा व चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं को पटरी पर लाने के जो प्रयास दिल्ली सरकार ने किये हैं वे अपने आप में बेशक बहुत बड़े काम नहीं हैं, लेकिन फ़िर भी, जैसे भी हैं, हरियाणा सरकार को मुंह चिढाने के लिये पर्याप्त हैं। इसी के चलते हरियाणा सरकार न तो दिल्ली सरकार के स्कूलों व चिकित्सा केन्द्रों को देखना चाहती है और न केजरीवाल को हरियाणा के बेहाल स्कूलों व चिकित्सा केन्द्रों को देखने देना चाहती है। केजरीवाल जब भी इन्हें देखने हरियाणा में आते हैं तो राज्य सरकार को बड़ी मिर्चें लगती हैं।

हरियाणा सरकार की इसी कमजोरी को पकड़कर अरविंद ने इन्ही दो मुद्दों को आधार बना कर अपना प्रचार तेज कर दिया है। उन्होंने बड़े पैमाने पर हरियाणावासियों को ठेठ हरियाणवी भाषा में टेलिफ़ोन करने शुरू कर दिये हैं। आधुनिक तकनीक के सहारे अरविंद मोबाइल फ़ोन पर लोगों से कहते हैं, ''मैं अरविंद केजरीवाल बोलूं सूं। मनै अपने स्कूल अर अस्पताल देखने तांई यो खट्टर कई ब बुला लिया, पर यो आंदा ए कोनी। इब कै इन नै हरा द्यो अर 'आप' नै जिताओ तो हरियाणा के स्कूल अर अस्पताल चकाचक कर द्यूंगा।''

जाहिर है समाज के सबसे बड़े एवं वंचित तबके के लिये दोनों ही मूलभूत आवश्यकतायें हैं और हरियाणा में ये दोनों ही सेवायें लगभग नदारद हैं। केजरीवाल ने जनता की इसी मौलिक आवश्यकता को समझते हुये इनमें सुधार करने के कुछ प्रयास किये जिनमें अभी तक मिली थोड़ी सी सफ़लता ने ही उनकी अगली जीत (दिल्ली में) निश्चित कर दी है। इसके अलावा बिजली, पानी व राशन व्यवस्था में मूलभूत सुधार करने के साथ-साथ तमाम सरकारी सेवायें दिल्ली वासियों के घर तक पहुंचा कर एक बड़ा काम किया है। उनके इन्हीं सब कामों ने हरियाणा में भी उनके बढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

हरियाणा सरकार की गुंडागर्दी आखिर कब तक रोक पायेगी केजरीवाल को

बीते सप्ताह अरविंद केजरीवाल असंध के निकट एक गांव पबाना के लोग़ों के आमंत्रण पर वहां जाने के लिये दिल्ली से निकले थे। पानीपत से असंध को जाने वाली सड़क पर हरियाणा पुलिस ने उन्हें रोकते हुये कहा कि पबाना गांव के लोग़ों ने गांव के बाहर उनके विरोध में प्रदर्शन शुरू कर रखा है और वे लोग उन्हें गांव में नहीं घुसने देंगे। हरियाणा पुलिस ने उन्हें सुरक्षित गांव तक ले जाने की बजाये पानीपत से ही वापस लौटा दिया।

बताने की जरूरत नहीं कि हर गांव, गली, मुहल्ले में शतप्रतिशत लोग कभी भी एक विचार के नहीं होते, इसके बावजूद सभी विचारों व सिद्धांतों के नेता वहां अपनी-अपनी बात करने पहुंचते हैं। लोकतंत्र में किसी भी नेता को कहीं भी जाने से रोकना न केवल अशोभनीय है बल्कि खुलेतौर पर सरकारी गुंडागर्दी है।

दूसरी ओर संघर्ष से उपजी 'आप' और इसके नेता का सरकारी गुंडागर्दी से इस तरह डर कर वापस चले जाना भी दर्शाता है कि केजरीवाल एवं उनकी पार्टी की धार अब उतनी तीखी नहीं रह गई है जिसके सामने न केवल कांग्रेस बल्कि मोदी की तथाकथित लोकप्रियता भी दिल्ली विधानसभा चुनाव में धराशाही हो गयी थी। अरविंद समझें या न समझें लेकिन जनता साफ़-साफ़ समझ रही है कि मुख्यमंत्री बनने के घमंड में जिस प्रकार उन्होंने अपनी ही पार्टी को तोड़-मरोड़ कर फ़ेंक दिया, उससे उनकी ताकत एवं लोकप्रियता रसातल में पहुंच चुकी है। इसी से प्रोत्साहित होकर भाजपा एवं उनकी सरकारें उन पर तरह-तरह से प्रहार करने में बेखौफ़ होकर जुटी हैं।

आज जो अरविंद हरियाणा में पैर जमाने के लिये छटपटा रहे हैं, यदि उनकी अक्ल से दुश्मनी न होती तो वे 2019 में भारत के प्रधानमंत्री पद के प्रबल दाबेदार होते। जिस व्यक्तिवाद का शिकार होकर वे पार्टी और सरकार दोनों पर कुंडली मार कर बैठे रहना चाहते हैं, उसके ही परिणाम आज वे भुगत रहे हैं। संघर्ष के दौरान उनकी पार्टी में देश भर के कोन-कोने से जो हीरे-मोती आकर जुड़े थे उन सबको केजरीवाल ने एक झटके में उठा कर फेंक दिया। उनके बदले अब कंकर-पत्थर के टुकड़ों से अपनी पार्टी को सजाये बैठे हैं।

9 दिसंबर को बदल सकता है हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्य

अजय और दुष्यंत चौटाला के बयानों ने गरमा दिया है राजनीतिक माहौल

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

रोहतक: हरियाणा में चौटाला परिवार की लड़ाई ने सिर्फ हरियाणा की राजनीति को दिलचस्प बना दिया है बल्कि चंद महीने बाद होने वाले लोकसभा-विधानसभा चुनाव में नए समीकरण के हालात पैदा कर दिए हैं। इनैलो से बाहर किए जा चुके अजय चौटाला गुट की दुकान सजने से पहले ओमप्रकाश चौटाला और उनके छोटे बेटे अभय चौटाला का पुराने वफादार लोगों द्वारा साथ छोड़ने का सिलसिला शुरू हो चुका है। अजय चौटाला की 9 दिसंबर की जींद रैली से पहले हरियाणा राजनीति का परिदृश्य काफी कुछ बदल जाएगा। अजय चौटाला के सांसद बेटे दुष्यंत चौटाला के इस बयान के बाद कि बहुजन समाज पार्टी और आम आदमी पार्टी से तालमेल की बात चल रही है, राजनीतिक माहौल को गरमा दिया है।

भाजपा का हाथ नहीं थामेंगे अजय

चौटाला परिवार की लड़ाई में भाजपा फैक्टर काफी महत्वपूर्ण है। भाजपा को लेकर पहली बार पिता अजय चौटाला की बजाय दुष्यंत चौटाला ने बयान दिया है कि भाजपा जनविरोधी पार्टी है। यह पार्टी समाज में नफरत फैलाकर उसे बांटने का काम कर रही है। दुष्यंत का यह बयान अगर सोच समझकर आया है तो इसे अजय चौटाला की नई पार्टी का नीतिगत फैसला माना जा सकता है। लेकिन अभी भी इस बयान को लेकर मजदूर मोर्चा को कम से कम संशय जरूर है। बहुत संभव है कि 9 दिसंबर की रैली में इस नीतिगत फैसले की अजय चौटाला घोषणा करें। उस दिन नई पार्टी के गठन और घोषणा के साथ-साथ अजय को यह साफ करना पड़ेगा कि भाजपा-आरएसएस के बारे में उनकी क्या राय है और भविष्य में उससे तालमेल होगा या नहीं। इसके बजाय अगर वह यह कहते हैं कि चुनाव के बाद फैसला होगा तो यह माना जाएगा कि जिस दलदल में चौटाला परिवार अब तक डूबा हुआ है, अजय भी उससे बाहर आने को तैयार नहीं हैं।

आम आदमी पार्टी के साथ तालमेल

दुष्यंत का कहना है कि उनकी नई पार्टी अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी (आप) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) से तालमेल करेगी।

पहले आम आदमी पार्टी पर बात करते हैं। आप के संस्थापक और दिल्ली के सीएम दरअसल हरियाणा में भिवानी के रहने वाले हैं। केजरीवाल की एक महत्वाकांक्षा हरियाणा में आप की सरकार बनाने की भी है। पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनाव में केजरीवाल ने हरियाणा को इतनी गंभीरता से नहीं लिया था लेकिन इस बार वह हरियाणा को लेकर काफी सक्रिय हैं और हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर उनके बयानों में निशाने पर रहते हैं। केजरीवाल की अभी तक हरियाणा की दो राजनीतिक यात्राएं हो चुकी हैं।

आम आदमी पार्टी का अभी हरियाणा में कोई जनाधार नहीं है लेकिन यह पार्टी शहरी मतदाताओं में भाजपा के प्रति बढ़ती नाराजगी को उभारकर कुछ वोट हासिल कर सकती है। अभी यह कहना मुश्किल है कि वह भाजपा या कांग्रेस का परंपरागत शहरी वोट काटेगी या फिर कोई और कोना तलाश कर नए वोटर का प्रेशर ग्रुप खड़ा करेगी। हरियाणा की शहरी सीटों पर कांग्रेस के मुकाबले भाजपा की पकड़ ज्यादा मजबूत नजर आती है। इसका मतलब यह हुआ कि अगर आप मजबूत होती है तो भाजपा को सीधा नुकसान होगा। इसलिए केजरीवाल रणनीति के तहत बार-बार हरियाणा के सीएम को निशाना बना रहे हैं। अभी तक उन्होंने हरियाणा के संदर्भ में कांग्रेस की कोई आलोचना नहीं की है।

अजय चौटाला की नई पार्टी खड़ी होने पर हरियाणा का कम से कम साठ से सत्तर फीसदी जाट मतदाता उसके पीछे जा सकता है। ऐसे में अगर आप का उसके साथ तालमेल होता है तो दोनों ही पार्टियां विन-विन (दो तरफा जीत) की स्थिति में होंगी। ...और अगर कहीं मायावती की बसपा भी इस गठबंधन में शामिल होती है तो तीनों मिलकर हरियाणा की राजनीति को पलटने की हैसियत रखते हैं। हरियाणा में दलितों का वोट पूरी तरह उधर ही ट्रांसफर होगा, मायावती जिधर चाहेंगी।

हमारे पाठकों को मजदूर मोर्चा में प्रकाशित वह फोटो याद होगी, जिसमें अभय चौटाला बसपा सुप्रीमो के घर रक्षाबंधन वाले दिन राखी बंधवाने पहुंचे थे। सूत्रों का कहना है कि जेल में उन दिनों बंद अजय चौटाला की पहल पर अभय को वहां भेजा गया था। यह बहुत बड़ा राजनीतिक सूझबूझ वाला फैसला था। यह अभी साफ नहीं है कि चौटाला परिवार में हुई उठापटक के बाद मायावती का झुकाव किस गुट के साथ होता है। क्योंकि अभय ने 17 नवंबर को चंडीगढ़ में पार्टी की जो कार्यकारिणी बैठक की थी, उसमें बसपा का झंडा भी लगाया था और उधर जींद में उसी दिन अजय ने जो बैठक की थी, उसमें भी बसपा के झंडे थे। इसलिए चौटाला खानदान को लेकर बसपा की स्थिति वक्त के साथ ही साफ हो पाएगी या उससे पहले मायावती का कोई स्पष्ट बयान आ जाए।

कुल मिलाकर दोनों ही दलों से अगर अजय की पार्टी का तालमेल होता है तो हरियाणा की राजनीति में नए युग की शुरुआत होगी।

कांग्रेस को सद्बुद्धि कब आएगी

हरियाणा के बदलते राजनीतिक परिदृश्य में कांग्रेस की फिलहाल कोई भूमिका नजर नहीं आ रही है। कांग्रेस में तूफान आने से पहले जैसी खामोशी छाई हुई है। भूपेंद्र सिंह हुड्डा की राजनीति आज भी कांग्रेस के दिल्ली दरबार तक सिमटी हुई है। उनकी कुल मिलाकर यह कोशिश रहती है कि पार्टी आलाकमान उनके मुकाबले कहीं रणदीप सुरजेवाला को हरियाणा न सौंप दे। उधर, कुलदीप विश्नोई तमाम हाथ-पैर मारने के बाद कांग्रेस में लौटे जरूर लेकिन अभी तक कोई करिश्मा नहीं दिखा सके। उनके पिता स्व. भजनलाल की हरियाणा के शहरी मतदाताओं पर खासी पकड़ थी। उनके वक्त में भाजपा कभी भी शहरों में ठीक से उभर नहीं पाई थी लेकिन कुलदीप विश्नोई अभी तक न तो पूरे हरियाणा में कोई आंदोलन खड़ा कर पाए हैं और न ही भूपेंद्र हुड्डा को राजनीतिक मात दे पाए हैं। वह भजनलाल की तरह गांधी परिवार की छवि के आधार पर वोट पाने और राजनीति करने में यकीन रखते हैं। लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि हरियाणा में अब भजनलाल की जैसी राजनीति करने वाले दिन हवा हो चुके हैं। भजनलाल से कहीं ज्यादा पैसा भाजपा के पास है। अगर विधायक बिकने के लिए तैयार होंगे तो पहला सौदा भाजपा या भूपेंद्र सिंह हुड्डा करेंगे, कुलदीप विश्नोई नहीं कर पाएंगे।

कांग्रेस कर क्या सकती थी

कांग्रेस चाहती तो वह अजय चौटाला को अपने पाले में लाती। भूपेंद्र सिंह हुड्डा को राष्ट्रीय राजनीति या कहीं का राज्यपाल बनाने का भरोसा दिया जा सकता था। अगर अजय चौटाला कांग्रेस के साथ आ जाते तो कांग्रेस बिना कुछ किए धरे हरियाणा में मजबूत हो जाती। लेकिन कांग्रेस में बैठे दिग्गज इस समीकरण को कभी नहीं बनने देंगे। क्योंकि उस स्थिति में भूपेंद्र हुड्डा और रणदीप सूरजेवाला आपस में समझौता कर अजय और उनके बेटों का रास्ता रोक देते। कांग्रेस की राष्ट्रीय राजनीति में फिलहाल रणदीप सूरजेवाला काफी ताकतवर बने हुए हैं। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का सीधे यस मैन होने की वजह से ऐसा फैसला पार्टी करने की स्थिति में नहीं है। इस तरह यह आसान सा लगने वाला समीकरण दरअसल काफी मुश्किल वाला है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06